आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-128/2015-2017

मन के जीते जीत सदा

अंक-262 | तारीख- 27 अगस्त, 2015, श्रावण शुक्ल पक्ष - 12 | गुरूवार | उदयपुर | कुल पृष्ठ-2 | मूल्य -1 रूपया

शाही ठाठ बाट से निकली तीज की सवारी

जयपुर। जयपुर में तीज माता की परम्परागत सवारी शाही ठाठ बाट के साथ निकाली गई। पर्यटन विभाग की ओर से आयोजित किये गए तीज फेस्टिवल के तहत निकाली गई इस सवारी को देखने के लिए शहरवासियों की भीड़ उमड़ पड़ी। बैंड बाजों के की मधुर स्वरलहरियां, हाथी–ऊँटों को लवाजमा और पीछे लोक कलाकारों के आकर्षक नृत्यों के साथ तीज माता की सवारी का शाही अंदाज के साथ निकलना। मौका था जयपुर में तीज माता की परम्परागत शाही सवारी का। शहर के जनानी ड्योढ़ी से निकली इस शाही सवारी को देखने के लिए मनो पूरा शहर ही उमड़ पड़ा हो। शहरवासी ही नहीं बल्कि देशी विदेशी सैलानी भी तीज माता की सवारी के इस अनुपम नजारे के गवाह रहे। दरअसल तीज माता की परम्परागत शाही सवारी हर साल कुछ इसी शाही अंदाज के साथ निकलती है। सवारी का सबसे खासा आकर्षण रहा लोक कलाकारों की प्रस्तुतियां। कच्ची घोड़ी और कालबेलिया नर्तकों ने इस दौरान समां बाँध दिया।

माँ गोदावरी की गोद में श्रद्वालुओं का रेला ध्वजारोहण के साथ शुभारम्भ

नसिक कुंभ मेला साधुग्राम ध्वजारोहण व जगत्गुरू रामानंदाचार्य प्रवेशद्वार उद्घाटन समारोह सम्पन्न।

नासिक/उदयपुर :– पवित्र पावन नगरी नासिक में सिंहस्थ कुंभमेला साधुग्राम ध्वजारोहण व जगत्गुरु रामानंदाचार्य प्रवेशद्वार उद्घाटन समारोह बुधवार को सम्पन्न हुआ, समारोह मुख्य अतिथि महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री माननीय देवेन्द्र फडणवीस, भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय श्री अमित भाई शाह एवं महापौर नासिक महानगरपालिका माननीय श्री अशोक मुर्तडक, जगद्गुरू रामानंदाचार्य श्री हंसदेवाचार्य जी महाराज, श्री नरेन्द्रचार्य जी महाराज, जगद्गुरू वल्लभाचार्य , श्री वल्लभराय जी महाराज,षष्ठ पीठाधीश्वर, सुरत टिलाद्वारा गाद्याचार्य मंगलपीठाधिश्वर श्री माधवाचार्य जी महाराज श्री मंहत धरमदास जी महाराज, श्री निर्वाणी अनी अखाड़ा श्री महंत श्री रामकिशोर दास जी शास्त्री महाराज, श्री दिगंबर अनी अखाड़ा , श्री महंत श्री राजेन्द्रदास जी महाराज श्री निर्मोही अनी अखाड़ा, निर्वाणी पीठाधीश्वर 'पद्म श्री' अलकृंत कैलाश 'मानव' नारायण सेवा संस्थान उदयपुर द्वारा ध्वजारोहण एवं जगत्गुरू रामानंदाचार्य प्रवेशद्वार उद्घाटन समारोह सम्पन्न हुआ। माँ गोदावरी के गोद में कुभ मेला में लाखों श्रद्वालुओं एवं धर्मानुरागियों का पावन भक्ति गंगा व कृपा प्रसाद रूपी पावस झड़ी का आगाज हो गया है।

चरक संहिता

चरक संहिता आयुर्वेद का उपलब्ध सबसे पुराना एवं प्रामाणिक ग्रन्थ है। यह संस्कृति भाषा में लिखा गया है। इसके प्रत्येक अध्याय के प्रारंम्भ में लिखा गया है– 'भगवान आत्रेय ने इस प्रकार कहा।' इसके कुछ अध्यायों के अन्त में बताया गया है कि 'इस तंत्र यानी शास्त्र को आचार्य अग्निवेश ने तैयार किया, चरक ने इसका संपदन किया और दृढ़बल ने इसे पूरा किया।' इससे यह स्पष्ट है कि इस ग्रन्थ में ऋषि आत्रेय के उपदेशों को संग्रहीत किया गया है। अग्निवेश ने इसे ग्रन्थ का रूप दिया, चरक ने इसमें संशोधन किया और दृढ़बल ने इसमें कुछ अध्याय जोड़े। किन्तु इसे कालांतर में 'चरक संहिता' के नाम से जाना गया, इसलिए लोगों में यह भ्रम फैला कि यह चरक की ही रचना है।

इस रचना को चरक संहिता क्यों कहा गया, इसके पीछे विद्वानों का तर्क है कि हमारे देश में चरक नाम के अनेक व्यक्ति हुए हैं। हो सकता है कि अग्निवेश की शिष्य परम्परा में किसी चरक नामक शिष्य ने इसका खूब प्रचार–प्रसार किया हो, इसलिए इसका नाम चरक संहिता पड़ गया हो। जबकि कुछ विद्वानों का मत है कि अग्निवेश के शिष्य एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा–जाकर रोगियों का इलाज करते थे। उनके निरंतर चलते रहने के कारण ही इसका नाम 'चरक' पड़ गया होगा।

चरक संहिता में कुछ शब्द पालि भाषा के मिलते हैं, जैसे अवक्रांति, जेंताक (जंताक–विनयपिटक), भंगोदन, खुड्डाक, भूतधात्री (निद्रा के लिये)। इस आधार पर कुछ विद्वान इसका उपदेशकाल उपनिषदों के बाद और बुद्ध के पूर्व का मानते हैं।

भारत के प्रसिद्ध सूर्य मंदिर

बेलाउर सूर्य मंदिरः–

इस मंदिर का निर्माण राजा सूबा ने करवाया था बाद में बेलाउर गांव में कुल 52 पोखरा (तालाब) का निर्माण कराने वाले राजा सूबा को राजा बावन सूब के नाम से पुकारा जाने लगा। बिहार के भोजपुर जिले के बेलाउर गांव के पश्चिमी एवं दक्षिणी छोर पर अवस्थित बेलाउर सूर्य मंदिर काफी प्राचीन है। राजा द्वारा बनवाए 52 पोखरो में एक पोखर के मध्य में यह सूर्य मंदिर स्थित है। यहां छठ महापर्व के दौरान प्रति वर्ष एक लाख से अधिक श्रद्धालु आते है जिनमें उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश के श्रद्धालु भी होते हैं। ऐसा कहा जाता है कि सच्चे मन से इस स्थान पर छठ व्रत करने वालों की सभी मनोकामनाएं पूरी होती है तथा कई रोग–व्याधियों से भी मुक्ति मिलती है।

झालरापाटन सूर्य मंदिर :–

झालावाड़ का दूसरा जुड़वा शहर झालरापाटन को सिटी ऑफ वेल्स यानी घाटियों का शहर भी कहा जाता है। शहर में मध्य स्थित सूर्य मंदिर झालरापाटन का प्रमुख दर्शनीय स्थल है। वास्तुकला की दृष्टि से भी यह मंदिर अहम है। इसका निर्माण दसवीं शताब्दी में मालवा के परमार वंशीय राजाओं ने करवाया था। मंदिर के गर्भगृह में भगवान विष्णु की प्रतिमा विराजमान है। इसे पद्मनाभ मंदिर भी कहा जाता है।

मार्तण्ड मंदिर प्रतिरूप :–

दक्षिण कश्मीर के मार्तण्ड के प्रसिद्ध सूर्य मंदिर के

प्रतिरूप का सूर्य मंदिर जम्मू में भी बनाया गया है। मंदिर मुख्यतः तीन हिस्सों में बना है। पहले हिस्से में भगवान सूर्य रथ पर सवार हैं जिसे सात घोड़े खींच रहे है। दूसरे हिस्से में दुर्गा गणेश कार्तिकेय पार्वती और शिव की प्रतिमा है और तीसरे हिस्से में यज्ञशाला है। हिन्दू मिथक के अनुसार मार्तण्ड कश्यप ऋषि के तीसरे बेटे का जन्म स्थान है।

खूब लड़ी मर्दानी वह तो ...

रानी लक्ष्मीबाई का जन्म 19 नवंबर, 1828 को काशी के असीघाट, वाराणसी में हुआ था। इनके पिता का नाम मोरोपंत तांबे और माता का नाम 'भागीरथी बाई' था। इनका बचपन का नाम 'मणिकर्णिका' रखा गया परन्तु प्यार से मणिकर्णिका को 'मनु' पुकारा जाता था।

मनु जब मात्र चार साल की थीं, तब उनकी मां का निधन हो गया। पत्नी के निधन के बाद मोरोपंत मनु को लेकर झांसी चले गए। रानी लक्ष्मीबाई का बचपन उनके नाना के घर में बीता, जहां वह "छबीली" कहकर पुकारी जाती थी। जब उनकी उम्र 12 साल की थी, तभी उनकी शादी झांसी के राजा गंगाधर राव के साथ कर दी गई। उनकी शादी के बाद झांसी की आर्थिक स्थिति में अप्रत्याशित सुधार हुआ। इसके बाद मनु का नाम लक्ष्मीबाई रखा गया।

अश्वारोहण और शस्त्र–संधान में निपुण महारानी लक्ष्मीबाई ने कुछ समय बाद एक पुत्र को जन्म दिया, पर कुछ ही महीने बाद बालक की मृत्यु हो गई। पुत्र वियोग के आघात से दुःखी राजा ने 21 नवंबर, 1853 को प्राण त्याग दिए। झांसी

शोक में डूब गई। अंग्रेजों ने अपनी कुटिल नीति के चलते झांसी पर चढ़ाई कर दी।

14 मार्च, 1857 से आठ दिन तक तोपें किले से आग उगलती रहीं। अंग्रेज सेनापति हयूरोज लक्ष्मीबाई की किलेबंदी देखकर दंग रह गया। रानी रणचंडी का साक्षात रूप रखे पीठ पर दत्तक पुत्र दामोदर राव को बांधे भयंकर युद्ध करती रहीं। झांसी की मुट्ठी भर सेना ने रानी को सलाह दी कि वह कालपी की ओर चली जाएं। झलकारी बाई और मुंदर सखियों ने भी रणभूमि में अपना खूब कौशल दिखाया। अपने विश्वसनीय चार–पांच घुड़सवारों को लेकर रानी कालपी की ओर बढ़ीं। अंग्रेज सैनिक रानी का पीछा करते रहे। कैप्टन वाकर ने उनका पीछा किया और उन्हें घायल कर दिया।

22 मई, 1857 को क्रांतिकारियों को कालपी छोड़कर ग्वालियर जाना पड़ा। 17 जून को फिर युद्ध हुआ। रानी के घायल होते हुए भी उन्होंने उस अंग्रेज सैनिक का काम तमाम कर दिया और फिर अपने प्राण त्याग दिए। 18 जून, 1857 को बाबा गंगादास की कुटिया में जहां इस वीर महारानी ने प्राणांत किया वहीं चिता बनाकर उनका अंतिम संस्कार किया गया। रानी लक्ष्मीबाई ने कम उम्र में ही साबित कर दिया कि वह न सिर्फ बेहतरीन सेनापति हैं बल्कि कुशल प्रशासक भी हैं।

झांसी की महान वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई वह आदर्श हैं उन सभी महिलाओं के लिए जो खुद को बहादुर मानती हैं और उनके लिए भी एक आदर्श हैं जो महिलाएं सोचती है कि वह महिलाएं हैं तो कुछ नहीं कर सकती। देश के पहले स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के अप्रतिम शौर्य से चकित अंग्रेजों ने भी उनकी प्रशंसा की थी।

मानव मन के बोल

(आत्मकथा)

सेवागुरु से मिलन...

तो मैं निवेदन कर रहा था कि बिसलपुर भैरवबाग के गेट पर पहुँचे, और जाते ही

चार मिले चौसठ खिले, बीस खड़े कर जोड़।
सज्जन से सज्जन मिले खिल गये लाख करोड़।।

और मैंने जैसे ही नमस्कार किया। एक 20–22 साल के युवक ने कहा आईये!आईये! पधारिये जय जिनेन्द्र सा.। और जैसे ही मैंने देखा दरवाजे के ऊपर फोटो लगा हुआ था, उस पर बालिका 8 साल की जिसकी एक आँख पर पट्टी बंधी हुई है। और दोनों हाथ जोड़े हुए हैं। और मुस्कुरा कर अभिवादन कर रही है। मैं तो कृत–कृत्य हो गया। मैं गद–गद हो गया। मेरी निगाहें वहीं टिक गई । मैं सेवा के स्थान पर आ गया। मैं पीड़ा निवारण के स्थान पर पहुँच गया। धन्य हो गया, भैय्या ने बिठाया, जल दिया और एलबम रखा हुआ था मैं उसको देख के गद–गद हो गया। कैसे बड़े राजमल जी भाई सा. अभी आये ही नहीं थे। पूछा देखो मेरे पास पोस्टकार्ड आया मुझे राजमल जी भाई सा. से मिलवाईये। बोला हाँ, भाई सा. बैठिये, बैठिए। अभी घन्टे भर में आ जायेंगे। वो जवाई बांध गये हुए है, डॉक्टर सा. को लेने गये है। रेलवे स्टेशन से अभी आ जायेंगे। सोचता रहा आज मेरा पुण्य उदय हो गया। आज मेरा धन्य भाग्य हो गया। आज मेरा स्वाती नक्षत्र आ गया। सेवा रस बरसावे....

क्रमशः अगले अंक में ...

सम्पादकीय

प्यास के मारे पाण्ड़वों के गले सूख रहे थे– कहीं पानी की उम्मीद नहीं थी आकाश मे उड़ते हुए पक्षियों की राह को देख कर युधिष्ठिर के आशा की किरण जगी।

एक–एक कर सभी भाइयों को उस दिशा मे भेजा गया–पानी के लिए। तालाब पर पहुँचने के बाद एक भी भाई वापस नहीं लौटा तो युधिष्ठिर की चिन्ता और भी बढ़ गई, वे स्वयं चल दिए उस मार्ग की ओर।

तालाब पर पहुँच कर देखा तो सभी भाई मूर्छित अवस्था में पड़े थे। उन्होनें पानी पीना चाहा कि यक्ष की आवाज आई। हे पथिक! तुम पहले मेरे प्रश्नों का जवाब दो उसके बाद पानी पीने का हक में तुम्हे दूगां। युधिष्ठिर ने विनम्र भावों से सहमति प्रदान कर प्रश्न पूछने के लिए निवेदन किया। यक्ष द्वारा पूछे गये सभी प्रश्नों के उत्तर दिए गये, उनमें से एक प्रश्न था– किम आश्चर्यम्? अर्थात दुनिया में क्या आश्चर्य है? जवाब था–'दुनिया हमारे सामने हमेशा कालकलवित हो रही है। बड़े–बड़े राजा, महाराजा, दिग्गज, वीर, सन्त एवं विश्व सम्राट कहे जाने भी हमारी आंखो के सामने मृत्यु के ग्रास बन रहे है। आपाधापी के मार्ग से धन अर्जित किया जाकर सग्रंह किया जाता है। धन का उपयोग ऐसे किया जा रहा है, जैसे हमारी मृत्यु होगी ही नहीं। मृत्यु कगार पर खड़ा व्यक्ति भी भावी योजनाएँ संसार में रहने की इच्छा के साथ बनाता है। सबको मालूम है कि हमारे साथ जाने वाली एक ही वस्तु है और वह है मात्र हमारे द्वारा दिया जाने वाला दान। फिर भी इसे अस्वीकार करते है–अपने वास्तविक जीवन में। यही सबसे बड़ा आश्चर्य है। यक्ष ने प्रसन्न होकर पानी पीने की आज्ञा दी।

क्या हम भी इस आश्चर्य को जानेंगे? क्या हम भी ऐसे अवसरों में मानवता को ही अपनायेंगे? कहीं हम निरर्थक संग्रह में तो नहीं लग गये? क्या हम यह तो नहीं सोच रहे है कि दान करने का अभी हमारा समय नही है? बहुत लम्बी उम्र पड़ी है–दान करने की, ऐसी कल्पना की बेड़ियों में तो अपने आप को नहीं बाँध रहें हैं–हम? जी हां मान्यवर, एक मामूली सा लकवा हमारे शरीर को पराधीन बना सकता है नित्य कर्म के लिए भी हम किसी पर आश्रित हो सकते है। यदि वृद्धावस्था में दान करने का सोचे तो हो सकता है उस समय तक हमारी आँखो की ज्योति नहीं रहे जो प्रकृति के दुःखो को देख सके। हमारे कान ऐसे क्षीण हो जाये जिससे हम दूसरों की वेदना न सुन सकें। यह सब कुछ संभव है, इस क्षण भंगुर जीवन में।

तो फिर क्यों रोकें सेवा के लिए बढ़ते हाथों को–क्यों दबा रहें है अपने करूणा भावों को? किस लिए रोक रहें हैं–इस पूँजी को? जो आज किसी को जीवन दे सकती है किसी दुःखी का दुःख देखकर अगर हमारी करूणा उमड़ती है, हृदय रोता है, मन पसीजता है तो दे डालिए जो अपने पास है–ताकि मृत्यु के बाद हमारा साथी बनकर दिया गया दान हमारे काम आ जाये।

नासिक में नारायण सेवा द्वारा –श्रीमद्भागवत कथा व चिकित्सा शिविर

उदयपुर/ नासिक। बाबा त्रयंबकेश्वर की नगरी नासिक में लगे कुंभ मेले में नारायण सेवा संस्थान की ओर से भक्ति रसपान व निःशुल्क चिकित्सा शिविर के माध्यम से सेवा कार्य हो रहा है। रामकृष्ण शास्त्री महाराज ने श्रीमद् भागवत कथा के माध्यम से कहा कि कलियुग में जो व्यक्ति प्रभु स्मरण करते है उनके कष्ट दूर होते है। संस्थान अध्यक्ष श्री प्रशान्त अग्रवाल ने बताया कि सेवा शिविर में विकलांग बंधुओं की चिकित्सा के साथ–साथ उनके अच्छे स्वास्थ्य के लिए प्रतिदिन श्रीमद्–भागवत कथा भजन संध्या के माध्यम से सर्वजन सुखाय की प्रभु से प्रार्थना की। कथा का सीधा प्रसारण प्रातः 10 से दोपहर 2 बजे तक आस्था भजन चैनल पर सीधा प्रसारण किया जा रहा है।

सांयकालीन 3 बजे से 6 बजे तक श्री बृजेशकृष्ण शास्त्री महाराज के श्रीमुख से कथामृत का रसपान और रात्रिकालीन वेला में सत्संग व प्रवचन से आनंद वर्षा की। श्री राकेश शर्मा, भगवान प्रसाद गौड़, हरिप्रसाद लड्ढा, अखिलेश अग्निहोत्री, फतेह सिंह चौहान व विनोद चौबीसा आदि साधकों ने भी विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन कृपा दीक्षित व ओम पाल ने किया।

रुणिचाना श्याम बाबा रामदेव पीर

रामदेवरा में प्रतिवर्ष भादवा सुदी दूज से भादवा सुदी एकादशी तक एक विशाल मेला भरता हैं। यह मेला दूज को मंगला आरती के साथ ही शुरू होता हैं। सांप्रदायिक सद्भाव के प्रतीक इस मेलें में शामिल होने व मन्नतें मांगने के लिए राजस्थान ही नहीं गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब, हरियाण, मध्यप्रदेश व अन्य राज्यों से भी लाखों की तादाद में श्रद्धालुजन पहुंचते है।

कोई पैदल तो कोई यातायात के वाहनों के माध्यम से रामदेवरा पहुंचता है। रुणिचा पहुंचते ही वहा की छठा अनुपम लगती है। मेले के दिनों में ''रुणिचा'' नई नगरी बन जाता हैं। मेले के अवसर पर जम्में जागरण आयोजित होते हैं तथा भंडारों की भी व्यवस्था होती हैं। मेले में कई किलोमीटर लम्बी कतारों में लग कर भक्तजन बाबा के जय–जयकार करते हुए दर्शन हेतु आगे बढ़ते हैं। इस मेले के अवसर पर पंचायत समिति एवं राज्य सरकार पूर्ण व्यवस्था करने में जुटी रहती हैं।

इस मेले के अतिरिक्त माघ माह में भी मेला भरता हैं। उसे ''माघ मेला'' कहा जाता है। जो लोग भादवा मेले की

भयंकर भीड़ से ऊब जाते हैं वे ''माघ मेले'' में अवश्य शामिल होते है तथा मंदिर में श्रद्धाभिभुत होकर धोक लगाते है। मेले का द्रश्य लुभावना, मनभावन, मनमोहक एवं सद्भाव और भाईचारे का प्रतीक सा सभी को अनुभव होता है। सभी यात्रियों के मुख से एक ही संबोधन ''जय बाबा री'' निकलता प्रतित होता है।

अपने से छोटे की सही सलाह पर भी गौर करें

एक बार की बात है एक राजा था। उसका एक बड़ा–सा राज्य था। एक दिन उसे देश घूमने का विचार आया और उसने देश भ्रमण की योजना बनाई और घूमने निकल पड़ा। जब वह यात्रा से लौट कर अपने महल आया। उसने अपने मंत्रियों से पैरों में दर्द होने की शिकायत की। राजा का कहना था कि मार्ग में जो कुंकड़ पत्थर थे वे मेरे पैरों में चुभ गए और इसके लिए कुछ इंतजाम करना चाहिए।

कुछ देर विचार करने के बाद उसने अपने सैनिकों व मंत्रियों को आदेश दिया कि देश की संपूर्ण सड़कें चमड़े से ढंक दी जाएं। राजा का ऐसा आदेश सुनकर सब सकते में आ गए। लेकिन किसी ने भी मना करने की हिम्मत नहीं दिखाई। यह तो निश्चित ही था कि इस काम के लिए बहुत सारे रुपए की जरूरत थी। लेकिन फिर भी किसी ने कुछ नहीं कहा। कुछ देर बाद राजा के एक बुद्धिमान मंत्री ने एक युक्ति निकाली। उसने राजा के पास जाकर डरते हुए कहा कि मैं आपको एक सुझाव देना चाहता हूँ।

अगर आप इतने रुपयों को अनावश्यक रूप से बर्बाद न करना चाहें तो एक अच्छी तरकीब मेरे पास है। जिससे आपका काम भी हो जाएगा और अनावश्यक रुपयों की बर्बादी भी बच जाएगी। राजा आश्चर्यचकित था क्योंकि पहली बार किसी ने उसकी आज्ञा न मानने की बात कही थी। उसने कहा बताओ क्या सुझाव है। मंत्री ने कहा कि पूरे देश की सड़कों को चमड़े से ढंकने के बजाय आप चमड़े के एक टुकड़े का उपयोग कर अपने पैरों को ही क्यों नहीं ढंक लेते। राजा ने अचरज की दृष्टि से मंत्री को देखा और उसके सुझाव को मानते हुए अपने लिए जूता बनवाने का आदेश दे दिया।

यह कहानी हमें एक महत्वपूर्ण पाठ सिखाती है कि हमेशा ऐसे हल के बारे में सोचना चाहिए जो ज्यादा उपयोगी हो। जल्दबाजी में अप्रायोगिक हल सोचना बुद्धिमानी नहीं है। दूसरों के साथ बातचीत से भी अच्छे हल निकाले जा सकते हैं।

आचार्य चाणक्य

'' अर्थनाशं मनस्ताप गृहे दुश्चरितानि च।
वच्चनं चापमानं च मतिमान्न प्रकाशयंत्।।''

1. चाणक्य मानते थे कि किसी भी व्यक्ति को अगर आर्थिक हानि होती है तो उसे भूलकर भी इस बात को किसी से साझा नहीं करना चाहिये। ऐसी बातें गुप्त ही रखनी चाहिये क्योंकि कोइ भी आपकी आर्थिक हानि का जानकर मदद करने को तैयार नहीं होगा। दूसरा उसे मदद ना करनी पड. जाए इस डर से दूर हो जाएगा। अतः सावधान, अपनी आर्थिक कमी की चर्चा किसी से न करें।
2. चाणक्य कहते हैं कि अपना दुख अपने तक ही रखना चाहिये। क्योंकि अगर आपने इसे साझा किया तो सबसे ज्यादा संभावनाएं यह होती हैं कि लोग आपकी मदद करने के बजाए आपका मजाक बनाए। हो सकता है यह मखौल आपको और अधिक दुखी कर दे।
3. अपनी पत्नी की अच्छी और बुरी बातें किसी से नही बांटना चाहिये विशेशकर पत्नी की बुरी बातें या चरित्र संबधी बातें। क्योकि जब हम घर के कलह, बुराई या स्त्री के चरित्र की बातें बाहर ले जाते हैं तो जग हंसाई के अलावा कुछ हासिल नहीं होता है।
4. किसी ने यदि आपको ठग लिया है तो इसे भी अपने तक ही सीमित रखिए, अन्यथा लोग आप का ही मखौल बनाएंगे कि आप चतुर नहीं है। हो सकता है इस बत का असर किसी पर यह हो कि अगली बार वह भी आपको ठगने का विचार करने लगे।
5. अगर आपसे नीचे स्तर के लोग आपका अपमान करें तो इसे कभी भी सार्वजनिक मत कीजिए। इससे आपकी ही प्रतिश्ठा कम होगी। यह बात आपके व्यक्तित्व से जोङकर देखी जा सकती है कि एक छोटा सा व्यक्ति भी आपको अममानित कर सकता है मतलब आपका अपना कोई सम्मान नहीं है।

आस्था एवं प्राकृतिक सौंदर्य की धनी नासिक नगरी में ''सिंहस्थ कुंभ 2015'' चल रहा है। यह धरा पतित पावनी और लक्ष्मण जी द्वारा सूर्पनखा की नाक काटने वाली जमीं है। माँ गोदावरी की गोद में वर्ष 2015 का नासिक कुंभ है। शास्त्रों की मान्यता है कि सिंहस्थ कुंभ नासिक की वेला में दिया गया दान हजार गुणा फलदायी होता है। कृपया आपश्री दान–दया–धर्म कर पुण्य अर्जित करें। संस्थान आपश्री को सेवा हेतू सादर अपील करता है।

प्रतिदिन भोजन सहयोग (500 व्यक्ति)

नाश्ता सुबह-5100 रू./सुबह का भोजन-12500 रू./शाम का भोजन-12500/पानी (प्रति दिन)-5100 रू.

कथा मुख्य यजमान - 200000/- पोथी जयमान - 21000/- आंशिक यजमान - 11000/- संकल्प सेवा - 5100/-
प्रतिदिन आरती यजमान - 11000/- व्यास पूजन यजमान - 11000/- भोजन प्रसाद यजमान - 100000/-

प्रतिदिन भगवत कथाओं का आयोजन

कृपया आपश्री संस्थान द्वारा नासिक में आयोजित कथाओं, एवं भजन प्रवाह-सत्संग के सहभागी बनें....

0294–6622222,3990000

मुख्य कार्यकारी अधिकारी – डॉ कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक–प्रशान्त अग्रवाल, जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका–कमला देवी, वन्दना अग्रवाल
सहायक प्रबन्धक – सोहन गाडरी
संपादक – लक्ष्मीलाल गाडरी
संपादक सहयोगी – घनश्याम सिंह राठौड़

मुद्रक–न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, प्रकाशक–कमला देवी, मुद्रण स्थल–13,भोपा मगरी, बीएसएनएल एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर–3, उदयपुर (राज.) प्रकाशन स्थल–ई–डी–71 बापा रावल नगर, हिरण मगरी, सेक्टर–6, उदयपुर (राज.) सम्पादक–लक्ष्मी लाल गाडरी, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2014/59353 मो.–09928022275,09785039524 www.mannkijeet.com E-mail : mankijeet2015@gmail.com